48

धन एवं शिष्य बनने पर शिक्षा

(19:16-30)

विवाह और तलाक पर यीशु की शिक्षा और बच्चों पर उसके आशीष देने के बाद, यीशु की सेवकाई का विषय एक शिष्य के जीवन में धन की भूमिका में बदल जाता है (19:16-30)। तीनों मामलों की सामान्य बात घरेलू है, क्योंकि विवाह, बच्चे और धन सभी का सम्बन्ध घर से है।

धनी जवान अधिकारी का प्रश्न (19:16-22)

[16]एक मनुष्य यीशु के पास आया और उस से कहा, ''हे गुरु; मैं कौन सा भला काम करूं, कि अनन्त जीवन पाऊं?'' [17]उस ने उस से कहा, ''तू मुझ से भलाई के विषय में क्यों पूछता है? भला तो एक ही है, पर यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो आज्ञाओं को माना कर।'' [18]उस ने उस से कहा, ''कौन सी आज्ञाएं?'' यीशु ने कहा, ''यह कि हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, [19]अपने पिता और अपनी माता का आदर करना और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।'' [20]उस जवान ने उससे कहा, ''इन सब को तो मैंने माना है; अब मुझ में किस बात की घटी है?'' [21]यीशु ने उससे कहा, ''यदि तू सिद्ध होना चाहता है; तो जा, अपना माल बेचकर कंगालों को दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा; और आकर मेरे पीछे हो ले।'' [22]परन्तु वह जवान यह बात सुन उदास होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।

आयत 16. सुसमाचार के इन तीनों सहदर्शी विवरणों में इस कहानी के बाद यीशु का बच्चों को आशीष देना आता है (19:16-22; मरकुस 10:17-22; लूका 18:18-23)। यह पक्का पता नहीं है कि आशीष देने और यहां वर्णित आदमी के साथ यीशु के दृश्य के बीच कितना समय लगा। मरकुस 10:17 यह कहते हुए इस कहानी का आरम्भ करता है, ''जब [यीशु] वहां से निकलकर मार्ग में जा रहा था तो एक मनुष्य उसके पास दौड़ता हुआ आया और उसके आगे घुटने'' टेक दिए। मत्ती के वृत्तांत में विवरण छोटा है कि **एक मनुष्य यीशु के पास आया**। इस कहानी वाले आदमी को पारम्परिक रूप में ''धनी जवान अधिकारी'' कहा जाता है। यह विवरण सुसमाचार के सहदर्शी वृत्तांतों में दिए गए अलग-अलग विवरणों का मेल है।

वह आदमी *धनी* था। मत्ती और मरकुस दोनों संकेत देते हैं कि ''वह बहुत धनी था'' (19:22; मरकुस 10:22)। लूका लिखता है कि ''वह बड़ा धनी था'' (लूका 18:23)। उसने इतना धन कहां से पाया, यह पता नहीं है; सम्भवतया उसे यह विरासत में मिला था। परन्तु धन को पाने के उसके ढंग का इतना महत्व नहीं है जितना उसके व्यवहार का।

वह आदमी *जवान* भी था। मत्ती में उसे दो बार "जवान" (*neaniskos*) कहा गया है (19:20, 22)। हिपोक्रेटस को उद्धृत करते हुए यहूदी दार्शनिक फिलो ने कहा कि यह समय 22 से 28 वर्ष की उम्र तक का है। उसने उम्र के समूहों को सात में बांटा: "वह अपने पूरे शरीर के बढ़ने के पूरा होने तक जवान है, जो चौथे सात वर्षों से मेल खाता है।"[1] पाइथागोरस को उद्धृत करते हुए यूनानी जीवनी लेखक डायोजीनस लेरटियुस ने कहा था कि "जवान" (*neaniskos*) 20 से 40 वर्ष की उम्र का होता था।[2] इसके प्रकाश में कोई कह सकता है कि इस कहानी वाला आदमी अभी जवां मर्द था।

इसके अलावा वह एक *अधिकारी* था। केवल लूका इस आदमी को "अधिकारी" (*archōn*) शब्द के साथ बताता है (लूका 18:18)। वह कोई स्थानीय राजनेता या शायद क्षेत्रीय अधिकारी हो सकता है। अधिक सम्भावना यही लगती है कि वह किसी स्थानीय अराधनालय के ऊपर अधिकारी था (9:18 पर टिप्पणियां देखें)। उसकी स्थिति जो भी थी, यह तो स्पष्ट है कि उसने इसे घूस या छल के द्वारा नहीं पाया था। वह एक भला, सदाचारी व्यक्ति था जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानता था (19:17–20)।

यह भला व्यक्ति यीशु के पास यह प्रश्न लेकर आया कि **"हे गुरु; मैं कौन सा भला काम करूं, कि अनन्त जीवन पाऊं?"** कुछ लोग जो यीशु के पास आते थे उसे "गुरु" कहकर बुलाते थे (8:19 पर टिप्पणियां देखें)। कुछ हस्तलिपियों में "गुरु" से पहले विशेषण शब्द "उत्तम" जोड़ा गया है जो सम्भवतया समानान्तर विवरणों में से लिया गया है (देखें मरकुस 10:17; लूका 18:18)।[3] मत्ती उस "काम" के वर्णन के लिए जिसे वह आदमी पूछ रहा था, विशेषण शब्द "भला" को सम्भाल लेता है।

उस आदमी के प्रश्न से इस विश्वास का संकेत मिल सकता है कि यदि उसने कोई "भला काम" कि हो तो वह अनन्त जीवन को पा सकता था या उसे पाने का अधिकारी था। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने इस विचार का समर्थन किया: "स्पष्टतया उस आदमी को ऐसा लगा कि गुण की कोई एक बात इतनी ऊंची है जिसे करने से अनन्त जीवन को सुरक्षित किया जा सकता है।"[4] उसका केवल इतना मानना हो सकता है कि उसके जीवन में कुछ कमी है और वह अपने अनन्त भविष्य को सुरक्षित करना चाहता था। उसके प्रश्न के पीछे मंशा जो भी हो, पर वह आदमी आत्मिक मामलों में दिलचस्पी रखता था और नहीं चाहता था कि वह अनन्त प्रतिफल से वंचित रहे।

नये नियम में और जगहों पर ऐसे ही प्रश्न मिलते हैं। चुंगी लेने वालों और सिपाहियों सहित लोगों की भीड़ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के पास आकर उससे पूछने लगी, "हे गुरु हम क्या करें?" (लूका 3:10, 12, 14)। पिन्तेकुस्त के दिन सुसमाचार के संदेश पर विश्वास लाने वालों ने पतरस और अन्य प्रेरितों से पूछा था, "हे भाइयो, हम क्या करें?" (प्रेरितों 2:37)। फिलिप्पी दारोगे ने पौलुस और सीलास से पूछा था, "हे साहिबो, उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूं?" (प्रेरितों 16:30)।

टालमुड में एलिएज़र के शिष्यों ने कहा, "स्वामी, हमें जीवन के मार्ग बतला दे ताकि हम उनके द्वारा भावी संसार के जीवन को जीत पाएं।"[5] इस आयत में हम मत्ती में पहली बार "अनन्त जीवन" की अभिव्यक्ति को देखते हैं (देखें 19:29; 25:46)। बाद में विशेषकर यूहन्ना में यह शब्द इस्तेमाल हुआ।

आयत 17. कुछ हस्तलिपियों में कहा गया है, ''तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थात परमेश्वर'' (देखें मरकुस 10:18; लूका 18:19)।[6] परन्तु NASB में मूल लेख को सम्भाला गया है: **''तू मुझ से भलाई के विषय में क्यों पूछता है? भला तो एक ही है, पर यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो आज्ञाओं को माना कर।''** यूनानी भाषा में ''मुझ'' सर्वनाम पर ज़ोर दिया गया है। अपने प्रश्न के द्वारा यीशु अपने बारे में उस जवान के विचार को परख रहा होगा। वह जवान पढ़ा लिखा यहूदी था और निश्चय ही उसे मालूम था कि व्यवस्था क्या कहती है। उसे यह याद दिलाते हुए कि केवल एक अर्थात स्वयं परमेश्वर ही सचमुच में ''भला'' है, यीशु उस जवान अधिकारी को भलाई के स्रोत की ओर ध्यान दिला रहा था।[7] हमारे भले परमेश्वर ने अपने वचन में प्रगट कर दिया है कि किसी व्यक्ति के लिए जो स्वर्ग में प्रवेश करने का इच्छुक हो क्या करना आवश्यक है। जो कुछ उसने कहा था उसे स्पष्ट करने के लिए यीशु ने जवान को कहा ''आज्ञाओं को माना कर।''

आयतें 18, 19. अधिकारी ने पूछा, **''कौन सी आज्ञाएं?''** वह इस बात का संकेत नहीं दे रहा था कि कुछ आज्ञाएं नज़रअन्दाज़ की जानी चाहिए बल्कि वह यह मान रहा था कि कुछ आज्ञाएं दूसरों से अधिक बड़ी हैं (देखें 23:23)।[8]

दस में से पांच आज्ञाओं के सम्बन्धों से सम्बन्धित होने की बात कहकर यीशु ने समझाया: **''हत्या न करना, व्यभिचार न करना,चोरी न करना झूठी गवाही न देना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना''** (देखें निर्गमन 20:12–16; व्यवस्थाविवरण 5:16–20)। यीशु ने दस आज्ञाओं में दिए अनुसार देने के बजाय ''अपने पिता और अपनी माता का आदर करना'' की सकारात्मक आज्ञा नकारात्मक आज्ञाओं के बाद दी। उसकी अन्तिम आज्ञा थी, **''अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखो,''** लैव्यव्यवस्था 19:18 से ली गई थी और यीशु द्वारा इसका इस्तेमाल संक्षिप्त कथन के रूप में किया गया। डेविड हिल ने दावा किया कि दस आज्ञाओं के बाद वाले भाग के उद्धरण बच्चों या नवपरिवर्तितों के लिए यहूदी शिक्षा में लैव्यव्यवस्था 19:18 के साथ मिला ह्विदए गए थे (देखें रोमियों 13:9)।[9]

आयत 20. उस अधिकारी ने दावा किया, **''इन सब को तो मैंने माना है।''** कुछ हस्तलिपियों में ''अपने लड़कपन'' या ''लड़कपन से'' (देखें मरकुस 10:20; लूका 18:21) [10] वाक्यांश जोड़ा गया है। एक स्तर पर उस आदमी के दावे को सही माना जा सकता है (देखें फिलिप्पियों 3:6); परन्तु एक और स्तर पर वह उन आज्ञाओं को पहाड़ी उपदेश की परिभाषा के अनुसार नहीं मान सकता होगा।[11] निश्चय ही हमें अपने व्यवहार के लिए इस जवान की सराहना करनी चाहिए। चाहे उसका मानना था कि वह इन आज्ञाओं को पूरी तरह से मानता था परन्तु फिर भी उस में किसी **बात की घटी थी।**

आयत 21. उस जवान अधिकारी की ईमानदारी और शालीनता के बावजूद प्रभु को मालूम था कि परमेश्वर के लिए उसकी सेवा में उसका धन रुकावट बन गया था। यीशु के मन में उस व्यक्ति के लिए प्रेम था (मरकुस 10:21) इस कारण उसने उसे उत्तर दिया, **''यदि तू सिद्ध होना चाहता है; तो जा, अपना माल बेचकर कंगालों को दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा; और आकर मेरे पीछे हो ले।''**

क्या यीशु के पीछे चलने की इच्छा रखने वाले हर व्यक्ति के लिए अपना माल बेचना

आवश्यक है? नहीं। यदि इस व्यक्ति ने यीशु और उसके चेलों के पीछे फलस्तीन के गांवों-गांवों और नगर नगर में उनके साथ जाना था, तो उसके लिए पूर्ण समर्पण आवश्यक होना था। यीशु ने (*teleios*) शब्द का इस्तेमाल किया जिसका अर्थ है "पूर्ण" या "परिपक्व" (1 कुरिन्थियों 2:6; 14:20; इफिसियों 4:13; फिलिप्पियों 3:15; कुलुस्सियों 1:28; 4:12; इब्रानियों 5:14)।[12] यीशु ने उससे पूर्ण और स्पष्ट उत्तर देने को कहा। बेशक वह हर एक पर यह शर्त नहीं बांध रहा था पर उन परिस्थितियों में जहां वे विश्वासयोग्य अनुयायी बनने में रुकावट बन रहे हों अपना माल बेचना आवश्यक हो सकता है।

उस आदमी के लिए केवल अपना माल बेचकर उससे मिला धन कंगालों को देना ही काफी नहीं था (देखें 1 कुरिन्थियों 13:3)। उसके लिए आवश्यक यीशु के "पीछे" हो लेना था जिसने कहा था, "मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता" (यूहन्ना 14:6)। "आकर मेरे पीछे हो ले" शिष्य बनने के लिए यीशु द्वारा दिए गए निमन्त्रण के रूप में आम तौर पर इस्तेमाल होता था (देखें 8:22; 10:38, 39; 16:24-26)। चार मछुआरों (4:19) और महसूल लेने वाले मत्ती (9:9) को बुलाने के समय उसने ऐसे ही शब्द कहे थे और उन्होंने वही किया था जो यीशु ने इस जवान अधिकारी से करने को कहा था।

आयत 22. वह जवान ... उदास होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था। यह आदमी यीशु की ओर आनन्द से दौड़ा आ रहा था (मरकुस 10:17), परन्तु प्रभु द्वारा उसे यह बता देने पर कि उसे अपने धन को त्याग देना चाहिए, वह उदास होकर चला गया। लूका ने लिखा है कि वह "बहुत उदास हुआ, क्योंकि वह बड़ा धनी था" (लूका 18:23)। उसके "धन" (*ktēma*) में ज़मीन, मकान, और फर्नीचर आदि होगा।[13] प्रेरितों ने यीशु के पीछे चलने के लिए इनमें से कुछ चीज़ों का त्याग किया था (19:29 पर टिप्पणियां देखें)।[14]

इस व्यक्ति के मामले में, स्वर्ग का धन पाने के लिए संसार के धन का त्याग करना आवश्यक था। पहाड़ी उपदेश में यीशु ने कहा था, "क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा" (6:21), और "तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते" (6:24)। यीशु के एक दृष्टांत में, एक आदमी ने छुपे हुए धन को जो कि राज्य है, पाने के लिए अपना सब कुछ आनन्द से बेच दिया था (13:44)। यीशु से जुड़ने के बजाय इस धनी जवान अधिकारी ने अपनी भौतिक सम्पत्ति से जुड़े रहने को चुना। डग्लस आर. ए. हेयर ने उस अधिकारी के निर्णय का यह अवलोकन किया है:

> उसे अपनी आमदनी का बहुत बड़ा भाग कंगालों को दिलाकर लज्जित किया जा सकता होगा। जो बात उसे अच्छी नहीं लगी वह सारे धन का त्याग था जिसमें विशेष अधिकार, रुतबा और आर्थिक शक्ति शामिल थी। वह किसी अज्ञात, भयभीत करने वाले संसार के लिए जिसमें यीशु उसे बुला रहा था अपने सुविधाजनक और सुरक्षित संसार को अर्पण करने को तैयार नहीं था। उसकी पहचान उसके धन से थी; बिना उसके उसे कोई नई पहचान नज़र नहीं आई। उसे पता था कि अपने संसार में उसका कितना "महत्व" था, और उन मानकों के अनुसार यीशु और उसके चेलों का "मोल" कुछ भी नहीं था।[15]

यीशु का मूल्यांकन (19:23-26)

[23]तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूं, कि धनवान का स्वर्ग के
राज्य में प्रवेश करना कठिन है। [24]फिर तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर के राज्य में धनवान
के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।'' [25]यह सुनकर, चेलों
ने बहुत चकित होकर कहा, ''फिर किस का उद्धार हो सकता है?'' [26]यीशु ने उनकी
ओर देखकर कहा, ''मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो
सकता है।''

आयत 23. उस जवान के चले जाने के बाद **यीशु अपने चेलों** से कहने लगा, **''मैं तुम से सच कहता हूं, कि धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है।''** लूका 18:24 कहता है कि उसने उस आदमी को ''देखकर'' ये शब्द कहे, जबकि मरकुस 10:23 कहता है कि उसने ''चारों और देखकर'' यह बात कही। यीशु के अपने चेलों की ओर मुड़कर उनसे यह शब्द कहने के समय हो सकता है कि वह उस आदमी को जाते हुए देख रहा हो।

''कठिन'' के लिए यूनानी शब्द (*duskolōs*) सुसमाचार के सहदर्शी वृत्तांतों में केवल इस शिक्षा में मिलता है (19:23; मरकुस 10:23; लूका 18:24)। *Duskolōs* का अर्थ है ''कठिनाई के साथ।'' मत्ती 7:14 में यीशु ने कहा कि ''सकेत है वह फाटक और कठिन है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है; और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।'' स्वर्ग का रास्ता आसान नहीं है (7:13, 14 पर टिप्पणियां देखें)।

मरकुस के कुछ प्राचीन हस्तलिपियों में ''धनवानों'' के लिए यीशु की बात ''जो धन पर भरोसा रखते हैं'' के अतिरिक्त वाक्यांश से स्पष्ट हो जाती है (मरकुस 10:23, 24)।[16] जो परमेश्वर पर भरोसा रखने के बजाय ''धन पर भरोसा रखते हैं'' उनके लिए अन्ततः परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना असम्भव हो जाएगा। यह वाक्य रचना प्रभु की शिक्षा को नरम करने के लिए किसी शास्त्री का प्रयास हो सकता है।

आयत 24. अपनी चेतावनी को समझाने के लिए, यीशु ने कहा कि **''परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।''** इस कथन का पहला भाग एक कहावत था, जो उस बात को दिखाता है जो असम्भव थी। ऊंट फलस्तीन में सबसे बड़ा जानवर था, जबकि सूई का नाका बहुत छोटे द्वार को दर्शाता है। बेबिलोन में हाथी सबसे बड़ा जानवर था, सो वहां पर यह कहावत थोड़ी अलग थी। टालमुड में कहा गया है, ''आदमी को स्वप्न में कभी ... *हाथी को सूई के नाके में से जाते हुए नहीं दिखाया जाता*''[17] यानी यह ऐसी बात है जिसे वह देखने की चेष्ठा नहीं करता था या ऐसा होने की कल्पना नहीं करता था। इसमें यह भी कहा गया है, ''शायद तुम पुम्बेडिथा के रहने वाले हो ... जहां वे *हाथी को सूई के नाके में से* निकाल देते हैं''[18]–जिसका अर्थ ऐसी बातों की कल्पना करना है, जो असम्भव हैं। बेशक वहां रहने वाले विद्वानों को अत्यधिक मक्कार माना जाता था।

यीशु को ऐसे तुलनात्मक रूपक का इस्तेमाल करना अच्छा लगता था। उसने तिनके और लट्ठे (7:3, 4), राई के दाने और बड़े हो चुके पेड़ (13:31, 32), राई के दाने और पहाड़ (17:20) और छननी और ऊंट (23:24) की भी बात की। माइकल जे. विलकिंस ने यीशु के

रूपक में कुछ हंसी की बात देखी: ''बात की गम्भीरता को न देखें, तो विशाल, कुबड़, बालों से भरे, फुफकारे मारते हुए, फूंक निकालते पशु के सिलाई करने वाली एक आम सूई के छोटे से नाके में से सिकुड़ने की असम्भावना की कल्पना करते हुए यीशु के सुनने वाले इस रूपक पर धीरे-धीरे मन ही मन हंसते होंगे।''[19] वैद्य लूका ने चाहे (कुलुस्सियों 4:14) ऑपरेशन करने वाली सूई के यूनानी शब्द का इस्तेमाल किया (*belonē*; लूका 18:25) का इस्तेमाल किया,[20] परन्तु मत्ती ने सिलाई की आम सूई के लिए शब्द (*rhaphis*) का इस्तेमाल किया। यीशू ने सुई के छोटे मुंह पर ज़ोर दिया न कि सूई के काम पर।

यीशु की बात को कमज़ोर करने के प्रयास होते रहे हैं। पुराने टीकाकारों ने सूई के नाके की व्याख्या यरूशलेम के तंग फाटक के रूप में की है, जिसमें से कोई ऊंट भार उतारने के बाद बिना झुके नहीं जा सकता। अन्यों ने इसे पहाड़ के दर्रे के बीच में से जाने वाला कोई तंग रास्ता बताने की कोशिश की है जिसमें से जाना ऊंटों के लिए बहुत ही कठिन था।

ऐसे भी टीकाकार हैं, जिन्होंने बाद के हस्तलेखों का इस्तेमाल किया जिनमें ''ऊंट'' (*kamēlos*) जो बोझ उठाने वाला जानवर है के लिए शब्द के बजाय ''रस्सी'' (*kamilos*) के लिए शब्द है।[21] परन्तु यदि ऊंट को नहीं तो रस्सी को भी सूई में से नहीं निकाला जा सकता, सो मुश्किल दोनों में है।

यीशु ने उस वास्तविक असम्भावना की बात की कि जो लोग बड़े धन से प्रेम रखते हैं वे स्वर्ग में नहीं जा सकते। धनवान स्पष्टतया ऐसा व्यक्ति था जिसे अपने धन पर ही भरोसा और सब कुछ उसी में मिला था। जो व्यक्ति अपने सांसारिक धन के लिए जीता और उस पर भरोसा रखता है उसे अनन्त जीवन की बातों और शर्तों को पूरा करना असम्भव लगेगा।[22]

पौलुस के शब्दों के अनुसार ''न शरीर के अनुसार बहुत ज्ञानवान, और न बहुत सामर्थी, और न बहुत कुलीन'' इस बुलाहट को स्वीकार करेंगे (1 कुरिन्थियों 1:26)। यीशु के प्रति धनवानों के वर्ग की प्रतिक्रिया के विपरीत ''साधारण लोग आनन्द से उसकी सुनते थे'' (मरकुस 12:37; NKJV)।

आयत 25. चेलों को यीशु की बात का असर तुरन्त समझ में आ गया और वे **बहुत चकित** हुए। यहूदी लोग धन को परमेश्वर की करुणा के चिह्न के रूप में देखते थे (भजन संहिता 112:1-3)।[23] इस विचार पर कि धनवानों को राज्य में से निकाल दिया जाएगा, चेले स्तब्ध रह गए। जिस कारण उन्होंने पूछा, **''फिर किस का उद्धार हो सकता है?''** अन्य शब्दों में, ''यदि वे लोग जो लगता है कि परमेश्वर की ओर से सबसे अधिक आशीषित हैं बचाए नहीं जा सकते, तो फिर कौन बचाया जा सकता है?'' चेलों के ध्यान में दूर जा चुका धनवान अधिकारी भी होगा। वह ''एक आदर्श नागरिक अर्थात शालीन, कानून का पालन करने वाला, दयालु और धार्मिक व्यक्ति'' था।[24] वे पूछ रहे थे, ''यदि ऐसा व्यक्ति परमेश्वर को स्वीकार्य नहीं है तो हमारे लिए उम्मीद कहां है?''[25]

आयत 26. यीशु चाहे एक धनवान के स्वर्ग में जाने की असम्भावना पर ज़ोर देना चाहता था पर उसने यह कहकर कि जो कुछ **मनुष्यों** के लिए असम्भव है वह **परमेश्वर** से **हो सकता है,** समीकरण में से **असम्भव** शब्द को निकाल दिया। परमेश्वर जब किसी बात को करना चाहे तो कोई भी बात उसकी सामर्थ से बाहर नहीं है।[26]

प्रेरितों के बलिदान (19:27-30)

[27]इस पर पतरस ने उससे कहा, ''देख, हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिए हैं: तो हमें क्या मिलेगा?'' [28]यीशु ने उन से कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूं, कि नई सृष्टि में जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा, तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिए हो, बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे। [29]और जिस किसी ने घरों या भाइयों या बहिनों या पिता या माता या बाल बच्चों या खेतों को मेरे नाम के लिए छोड़ दिया है, उस को सौ गुना मिलेगा: और वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा। [30]परन्तु बहुत से जो पहले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, पहिले होंगे।''

आयत 27. पतरस ने एक बार फिर से चेलों के प्रवक्ता का काम किया (15:15; 16:16; 17:4)। उसने यीशु से पूछा, **''देख, हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिए हैं: तो हमें क्या मिलेगा?''** बिना डांट फटकार के यीशु ने उसके प्रश्न का उत्तर दिया। इन लोगों ने यीशु के पीछे चलने के लिए सचमुच में सब कुछ छोड़ दिया था। डब्ल्यू. एफ़. अल्ब्राइट और सी. एस. मन ने सुझाव दिया है कि पतरस के प्रश्न में फिर से उस जवान की बात थी। पतरस कह रहा था, ''हमने वह सब किया है, जिन्हें जवान करने को तैयार नहीं था। तो फिर हमें क्या इनाम मिलेगा?''[27]

आयत 28. यीशु ने अपने प्रेरितों को आश्वस्त किया कि राज्य की खातिर उनके व्यक्तिगत बलिदान व्यर्थ नहीं जाएंगे। उसने उन्हें बताया कि वे **बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय** करेंगे। यह तब होना था, जब **मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा**। ''बारह सिंहासन'' का अर्थ शाब्दिक है या प्रतीकात्मक? ''न्याय'' करने की बात प्रेरितों की शिक्षा के द्वारा न्याय करना है या सचमुच में निर्णय देना? ''इस्राएल के बारह गोत्र'' किसे कहा गया है? यह वाक्यांश पृथ्वी पर कलीसिया का संकेत है या स्वर्गीय क्षेत्र के सभी पवित्र लोग इसमें शामिल हैं? ''सृष्टि'' से क्या अभिप्राय है? यह पृथ्वी पर मसीही युग की बात है या भविष्य की स्वर्गीय स्थिति की?

सारी व्याख्या ''नई सृष्टि'' (*palingenesia*) के शब्द के अर्थ पर टिकी है। इस मिश्रित शब्द में ''पुन:'' (*palin*) और ''पीढ़ी'' या ''मूल'' (*genesis*) शब्दों का मेल है। यहूदी लेखक *palingenesia* का इस्तेमाल कई संदर्भों में करते थे। फिलो के लेखों में इसका संकेत प्रलय के बाद के नये संसार की ओर है।[28] जोसेफस ने इसे बाबुल के निर्वासन से इस्राएलियों के वापस आने के बाद के लिए इस्तेमाल किया।[29] नये नियम में *palingenesia* केवल एक और बार तीतुस 3:5 में मिलता है, जहां इससे ''नये जन्म के स्नान [बपतिस्मा] और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने'' के अर्थ में है। यह उपयोग ''जल और आत्मा से'' ''नये सिरे से जन्म'' लेने की यीशु की शिक्षा से मेल खाता है (यूहन्ना 3:3, 5)।

आयत 28 की दो सम्भावित व्याख्याएं दिखाई देती हैं।[30] पहला विचार ''नई सृष्टि'' मसीही युग या कलीसिया/राज्य के युग से मिलता है। आखिर स्वर्ग में ऊपर उठाए जाने के समय मसीह को पिता के दाहिने हाथ सिंहासन पर बिठाया गया था (प्रेरितों 2:29–36; 1 कुरिन्थियों 15:23–28; कुलुस्सियों 1:13; इब्रानियों 1:13), जैसा कि आयत 28 में मिलता है। ''नई सृष्टि''

शब्द का अर्थ वर्तमान युग के लिए ही होगा, जब लोग सुसमाचार को सुन रहे हैं और नये सिरे से जन्म ले रहे हैं या नई सृष्टि बनते हैं (तीतुस 3:5)।[31] इस विचार के अनुसार सिंहासन का अर्थ शाब्दिक न होकर प्रतीकात्मक है। अपनी शिक्षाओं और अगुआई के द्वारा प्रेरितों ने मानवीय इतिहास के अन्तिम युग तक कलीसिया के लिए अगुआई और निर्देशन देना था। एच. लियो बोल्स ने लिखा है, "विचार यह है कि प्रेरित लोग न्याय करने वाले हैं, जैसे अपने जीवनकाल में वे पृथ्वी पर रहते समय नियमों और व्यवहारों को व्यवस्थित करते थे और अब परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए अपने लेखों के द्वारा वे कलीसिया के लोगों को चलाते हैं।"[32]

दूसरा विचार "नई सृष्टि" शब्द को स्वर्गीय स्थिति या "आने वाले युग" से मिलाता है। यह भाषा समानान्तर आयतों में मिलती है (मरकुस 10:30; लूका 18:30)। यह सच है कि मसीह इस समय राज कर रहा है और एक दिन राज्य को पिता को लौटाने के लिए वापस आएगा (1 कुरिन्थियों 15:24)। परन्तु वह पिता के साथ अनन्तकाल तक भी राज करेगा (प्रकाशितवाक्य 22:3)। इसका अर्थ यह हुआ कि "नई सृष्टि" शब्द का संकेत "नये आकाश और नई पृथ्वी" की ओर है, जिसमें परमेश्वर "सब बातें नई" कर देता है (प्रकाशितवाक्य 21:1-5; देखें यशायाह 65:17; 66:22; रोमियों 8:18-25; 2 पतरस 3:13)। "इस्राएल के बारह गोत्रों" स्वर्गीय क्षेत्र के उन सभी उद्धार पाए हुए लागों को कहा गया है जिस पर बारह प्रेरित राज करते थे (देखें 1 कुरिन्थियों 6:2, 3; 2 तीमुथियुस 2:12; प्रकाशितवाक्य 3:21; 21:9-14)।

यीशु अवश्य ही एक और संदर्भ में प्रेरितों से यही बात कर रहा था, वहां चाहे उसने "नई सृष्टि" के बजाय "राज्य" शब्द का इस्तेमाल किया: "परन्तु तुम वह हो, जो मेरी परीक्षाओं में लगातार मेरे साथ रहे। और जैसे मेरे पिता ने मेरे लिए एक राज्य ठहराया है, वैसे ही मैं भी तुम्हारे लिए ठहराता हूं, ताकि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज पर खाओ-पियो; वरन सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करो" (लूका 22:28-30)। संदर्भ पर निर्भर करता है कि "राज्य" शब्द का इस्तेमाल वर्तमान वास्तविकता (कलीसिया) के लिए होता है या भविष्य की उम्मीद (स्वर्ग) के लिए। यह वचन पक्के तौर पर इस प्रश्न का उत्तर नहीं देता कि इन दोनों व्याख्याओं में से सही कौन सी है, चाहे राज्य में खाना पीना भविष्य के समय का संकेत लगता है। प्रेरितों के मसीह के साथ स्वर्ग में राज करने का विचार प्रतिफल पाने के विचार से अधिक मेल खाता लगता है, जो इस आयत में पाया जाता है। यह भी हो सकता है कि यीशु ने वास्तव में स्वर्गीय बातों के साथ सांसारिक बातों को मिला दिया।

आयत 29. यीशु ने आगे कहा, **"जिस किसी ने घरों या भाइयों या बहिनों या पिता या माता या बाल बच्चों या खेतों को मेरे नाम के लिए छोड़ दिया है, उस को सौ गुना मिलेगा: और वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा।"** इस्राएल के गोत्रों का न्याय करने के लिए बारह सिंहासनों पर बैठने की उसकी प्रतिज्ञा केवल प्रेरितों के लिए थी। इस आयत के साथ अगली आयत की प्रतिज्ञा "जिस किसी" पर लागू होती है। यीशु के पीछे चलने वालों को आम तौर पर पारिवारिक सम्बन्धों, नौकरियों और सम्पत्ति का बलिदान देना पड़ा था (4:22; 8:21, 22; 9:9)। पहले यीशु ने बताया था कि उसके चेलों के लिए अपने जीवनों में उसे पहल देना आवश्यक है, यहां तक कि अपने परिवार के लोगों से भी बढ़कर (10:37)। यहां पर उसने कहा कि जिस भी किसी ने "[उसके] नाम के लिए" ये बलिदान किए उन्हें बड़े प्रतिफल दिए जाएंगे।

मरकुस ने कहा कि ये बलिदान ''सुसमाचार के लिए'' (मरकुस 10:29) होने से जबकि लूका ने कहा कि यह ''परमेश्वर के राज्य के लिए'' किए जाने थे (लूका 18:29)।

यूनानी धर्मशास्त्र में मूलतया ''सौ गुणा'' (KJV) या ''सौ गुणा जितना'' (NIV) है। खेती बाड़ी की यह भाषा असाधारण उपज का संकेत देती है (13:8 पर टिप्पणियां देखें)। मसीह के कहने का अर्थ आवश्यक नहीं है कि यह हो कि उसके चेलों को अधिक भौतिक आशिषें मिलेंगी। इसके बजाय एक विश्वासी को मिलने वाले प्रतिफल आनन्द, परिपूर्णता और अन्य सम्बन्धों के रूप में मिलते हैं; ये आशिषें उसके पीछे चलने के लिए किए गए किसी भी बलिदान से बढ़कर होंगी। हमें चाहे यीशु के शब्दों की अक्षरश: व्याख्या करने के बारे में चौकस रहना आवश्यक है पर याद रखें कि उसके असंख्य सेवकों ने अपने लिए कई घरों के दरवाजे खुले पाने के लिए अपने घर को छोड़ दिया और कलीसिया के और बड़े परिवार को पाने के लिए केवल परिवार को छोड़ दिया।[33] अन्तत: इस जीवन में मसीह के लिए बलिदान करने वालों को अगले जीवन में अनन्त जीवन की मिरास मिलेगी।

आयत 30. यीशु ने अपनी व्याख्या यह कहते हुए समाप्त की कि ''**बहुत से जो पहले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, पहिले होंगे**'' (देखें 20:16; लूका 13:30; 22:24-27)। राज्य में सबसे बड़ा होने की बहस के सम्बन्ध में प्रेरितों से प्रभु की चर्चा के मरकुस के विवरण में यीशु ने उन्हें बताया, ''यदि कोई बड़ा होना चाहे, तो सबसे छोड़ा और सबका सेवक बने'' (मरकुस 9:33-35)। पतरस ने चाहे अपने आरम्भिक प्रश्न में उन सब को शामिल किया था (19:27) परन्तु यीशु ने ज़ोर दिया कि उनमें से किसी को भी दूसरों से ऊंचा पद या पदवी नहीं मिलेगी। प्राथमिकता चाहने वालों को उन्हें शर्मिंदा होना पड़ना था और जो इसे नहीं चाहते थे उन्हें ऊंचा किया जाना था।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

यीशु और धनवान
(19:16-30)

यह मान्यता कि यीशु धनवानों के विरुद्ध था गलत है। वह सचमुच में किसी का पक्षपात करने वाला नहीं था। उसके चेलों में जक्कई, अरिमतियाह का यूसुफ और निकुदेमुस थे (लूका 19:1-10; मत्ती 27:57; यूहन्ना 3:1, 2; 19:38, 39)। धनवान अपने धन का इस्तेमाल दूसरों को आशीष देने और परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने के लिए करें (1 तीमुथियुस 6:17-19); बेशक ऐसा करके वे परमेश्वर को प्रसन्न कर सकते हैं। उस जवान अधिकारी की समस्या धन नहीं था बल्कि धन से प्रेम था (1 तीमुथियुस 6:10)। धनवान होने के लिए उसको गलत नहीं कहा गया था।

यीशु ने हर किसी से वही बलिदान नहीं चाहा, जो उसने उस जवान से मांगा था। उसने यह निर्देश इसलिए दिया क्योंकि उसे मालूम था कि उस आदमी की समस्या क्या थी। हमें मसीह के पीछे चलने के लिए चाहे अपना सब कुछ बेचने की आवश्यकता नहीं है परन्तु उसके पीछे चलने के लिए हमारा सांसारिक धन गौण होना आवश्यक है (फिलिप्पियों 3:7-11)। यदि भौतिक

धन हमारा ईश्वर बन जाए तो एक सच्चे परमेश्वर के लिए जगह नहीं रहेगी (6:24)। हम दोनों की सेवा नहीं कर सकते।

टिप्पणियां

[1]फिलो *ऑन द क्रिएशन* 36. [2]डायोजीनस लेयरटियुस *लाइव्स ऑफ़ इमिनेंट फिलासफर्स* 8.7. [3]ब्रूस एम. मैज़गर, *ए टैक्चुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क. (स्टटगर्ट: जर्मन बाइबल सोसायटी, 1994), 39; देखें NKJV. [4]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे, *द न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू एंड मार्क* (पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 167. [5]टालमुड *बेराक्रोथ* 28बी। [6]मैज़गर, 39–40; देखें KJV; NKJV. [7]भजन संहिता में बार-बार परमेश्वर की भलाई को मनाया जाता है (भजन संहिता 16:2; 25:8; 34:8; 86:5; 100:5; 106:1; 107:1; 118:1, 29; 135:3; 136:1; 145:9)। मिशनाह में भी लोगों को परमेश्वर को उसकी भलाई के लिए धन्य कहने के लिए प्रोत्साहित किया गया: "धन्य है वह, भला और भलाई का करने वाला" (मिशनाह *बेराक्रोथ* 9.2)। [8]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू,* इंटरप्रिटेशन (लुईसविल्ले: जॉन नोक्स प्रैस, 1993), 225. [9]डेविड हिल, *द गॉस्पल ऑफ मैथ्यू,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 283. [10]मैज़गर, 40; देखें KJV; NKJV.

[11]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 14–28,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33बी (डलास: वर्ड बुक्स, 1995), 558. [12]जैक पी. लुईस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 2, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 70–71. [13]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक डब्ल्यू. डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 572. बाउर ने प्राचीन साहित्य से दो समानताएं लिखीं: धनवान जवान ने डायोजीनस की बात मानी और एक सिनेटर ने साधु बनने के लिए अपनी सारी सम्पत्ति त्याग दी। (डायोजीनस *एपिस्टल्ज़* 38.5; पोरफायरी *लाइफ ऑफ प्लोटिनुस* 7.) [14]दिलचस्प बात है कि अपना सारा धन त्याग देना रब्बियों की शिक्षा के विरुद्ध था। तालमुड के एक आयत में पाठ से अपनी सम्पत्ति के पांचवे भाग से अधिक खर्च न करने की शिक्षा है। (टालमुड *केटुबोथ* 50ए।) [15]हेयर, 227. [16]मैज़गर 90; देखें KJV; NKJV. [17]टालमुड *बेराक्रोथ* 55बी। [18]टालमुड *बाबा मेज़िया* 38बी। [19]*जौंडरवन इलस्ट्रेटड बाइबल बैकग्राउंड्स कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक,* संपा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन 2002), 120 में माइकल जे. विलकिन्स, "मैथ्यू।" [20]विलियम कर्क होबर्ट, द *मेडिकल लैंग्वेज ऑफ़ सेंट लूक* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954), 61.

[21]मैज़गर, 40. मैज़गर ने समझाया कि "दोनों यूनानी शब्दों का उच्चारण एक जैसा होता था।" उन्हें शास्त्रियों द्वारा, विशेषकर जो किसी पाठक से सुन रहे हों आसानी से उलझाया गया होगा। [22]द *इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संशो. संस्क., संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1986), 3:510 में जॉन जे. ह्यूगस, "नीडल।" [23]यह मान्यता थी कि परमेश्वर के पीछे चलकर जो सब आशिषों का देने वाला है व्यक्ति अपने धन को बनाए रख सकता है। (*लैटर ऑफ़ अरिस्टियस* 204, 205.) [24]हेयर, 228. [25]वही। [26]देखें उत्पत्ति 18:14; अय्यूब 42:2; जकर्याह 8:6; मरकुस 9:23; लूका 1:37; 2 कुरिन्थियों 9:8; फिलिप्पियों 4:13. [27]डब्ल्यू. एफ. अल्ब्राइट एंड सी. एस. मन, *मैथ्यू,* द एंकर बाइबल (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे एंड कं., 1971), 233. [28]फिलो *लाइफ ऑफ मोसेस* 2.12. [29]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 11.3.9. [30]कुछ लोग इस आयत को हज़ार वर्ष के राज्य की अपनी शिक्षा से मिलाने की कोशिश करते हैं परन्तु पृथ्वी पर मसीह के हज़ार वर्ष के राज्य की उनकी अवधारणा पवित्र शास्त्र से छल करने के आधार पर है।

[31]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू* (आस्टिन, टैक्सस: फ़र्म फ़ाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1968), 298–99. [32]एच. लियो बोल्स, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1936), 396. [33]लुईस, *मैथ्यू,* 73.